शांति नायक - भारत

➢ हालिया संदर्भ :

- प्रत्येक वर्ष 21 सितम्बर को अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस मनाया जाता है, जिसकी शुरूआत 1981 में संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) द्वारा सभी देशों के लोगों के बीच शांति के आदर्शों को मजबूत करने के उद्देश्य से की गई।
- 2001 में UNGA ने सर्वसम्मति से इस दिन का अहिंसा एवं युद्ध विराम के समय के रूप में मनाने के लिये मतदान किया।
- इस दिवस का इस वर्ष का थीम है - "शांति की संस्कृति का विकास"।

➢ अंतर्राष्ट्रीय शांति में भारत :

- विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों की स्थिति में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में कहा कि भारत ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता, शांति एवं अंतर्राष्ट्रीय कानून के प्रति सम्मान जैसे सिद्धांतों पर प्रतिबद्धता दर्शाया है।
- ऐतिहासिक रूप से ही भारत वैश्विक शांति का प्रमुख वार्त्ताकार रहा है।
- देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के कार्यकाल एवं WW-II के बाद से ही भारत के पास शांति स्थापना के लिये अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता का अनुभव है।

➢ रूस-यूक्रेन शांति स्थापना में भूमिका :

- इस युद्ध की शुरूआत से ही भारत संवाद एवं कूटनीति के जरिए शांति बहाल करने का पक्षधर रहा है।
- भारत ने विगत 3 वर्षों के युद्ध-अवधि में युद्ध-तीव्रता को कम करने के लिये कई प्रयास किए।
- एस. जयशंकर के अनुसार प्रधानमंत्री श्री मोदी एवं विश्व के अन्य नेताओं ने कीव पर रूसी परमाणु हमला टालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- रूस ने जब ब्लैक सी ग्रेन इनिशिएटिव (यूक्रेन से अनाज का परिवहन कार्यक्रम) को समाप्त कर दिया, तब भारत ने G-20 सम्मेलन में इसे पुनजीर्वित करने के प्रयास किए।
- हाल के समय में दोनों देशों ने शांति के प्रयासों के लिये भारत पर भरोसा जताया है।
- पीएम मोदी की यूक्रेन यात्रा के बाद रूस की यात्रा ने पुतिन के पिछली अनिच्छा को बदल दिया और पुतिन ने स्पष्ट कहा कि वे शांति वार्ता के लिये भारत जैसे विश्वसनीय देशों के संपर्क में है।
- QUAD शिखर सम्मेलन के दौरान मोदी एवं जेलेंस्की की मीटिंग होने की संभावना है, वहीं BRICS शिखर सम्मेलन में मोदी पुतिन से मिलेंगे, जो शांति वार्ता में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।
- पुतिन ने स्पष्ट कहा कि भारत उनके तीन ईमानदार भागीदारों (अन्य 2 चीन एवं ब्राजील) में से है और वे इन पर शांति वार्ता से युद्ध का हल निकालने के लिये विश्वास करते हैं।
- प्रधानमंत्री मोदी ने भी कहा कि भारत इस संघर्ष में 'तटस्थ' नहीं है, बल्कि सक्रिय रूप से शांति के पक्ष में है।

➢ पूर्व का अनुभव :

▪ कोरियाई संकट :

- शीत युद्ध के दौरान उत्पन्न कोरियाई संकट (1952-53) में भारत ने शांति प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- संयुक्त राष्ट्र ने कोरिया संकट पर भारतीय शांति प्रस्ताव को 1952 में अपनाया और भारत USA, USSR एवं चीन जैसे प्रमुख हितधारकों के बीच सहमति बनाने लगा।
- भारत ने तटस्थ राष्ट्र प्रत्यावर्तन आयोग की अध्यक्षता की, जिसने दोनों पक्षों के युद्धबंदियों के भाग्य का फैसला किया।
- भारत ने कस्टोडियन फोर्स की एक टुकडी को भी 38वीं समानांतर रेखा पर तैनात किया ताकि शांति बहाल हो सके।
- नेहरू ने ऐसे कोरियाई युद्ध-बंदियों को भी शरण दिया, जो देश वापस नहीं लौटना चाहते थे।
- इसके अलावा भारत कोरिया संकट पर गठित संयुक्त शब्द आयोग एवं तटस्थ राष्ट्र पर्यवेक्षी आयोग का भी एक सक्रिय सदस्य था।
- पूरे विश्व समुदाय ने भारत के प्रयासों की प्रशंसा की क्योंकि भारत ने बिना भू-राजनीतिक लाभ के दोनों देशों (उत्तर एवं दक्षिण कोरिया) के बीच शांति स्थापित करवाने में भूमिका निभाई।

Result Mitra

- नेहरू एवं उनके सहयोगियों कृष्ण मेनन, के. एम. पणिक्कर तथा वी. एन. राव ने इस पहल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

➢ अन्य प्रयास :

- पीएम नेहरू ने 1955 में USSR एवं ऑस्ट्रिया के बीच चल रहे संघर्ष में ऑस्ट्रिया से USSR सैनिकों की वापसी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 1950-1960 के दशक में वियतनाम में युद्ध के दौरान पर्यवेक्षण एवं नियंत्रण के लिये अंतर्राष्ट्रीय आयोग की सह-अध्यक्षता की।
- 1961 में गुटनिरपेक्ष आंदालेन के प्रणेता के रूप में भारत ने शीत युद्ध के दौरान गुटबाजी को कम कर दुनिया को 2 भागों में विभाजित होने से बचाया।
- 1979 में भारत ने वियतनाम पर चीन के आक्रमण का विरोध किया तथा USSR द्वारा अफगानिस्तान पर आक्रमण की स्थिति में संयम बरतने का आह्वान किया।
- इसके अलावा USA का 2001 में अफगानिस्तान एवं 2003 में इराक पर आक्रमण का भी भारत ने आलोचना किया।

Result Mitra